नागर शैली में निर्मित भारतीय मुख्य मंदिर खजुराहों का विवेचनात्मक वर्णन

अवनीत दहिया
शोधार्थी
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली, भारत

कुलदीप सिंह
असिसटेंट प्रोफेसर, ललित कला विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र
ईमेलः kuldeepgrover724@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

अवनीत दहिया
कुलदीप सिंह

नागर शैली में निर्मित भारतीय मुख्य मंदिर खजुराहों का विवेचनात्मक वर्णन

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 21 pp. 128-134

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

खजराहो के मंदिरों के निर्माण में उस समय के उत्तर भारत की । बहुप्रचलित 'नागर शैली' अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची हई दिखाई देती है । आकार–सौंदर्य और मूर्तिसम्पदा की दृष्टि से ये मंदिर भारत के समान रूप अन्य सब स्मारकों अथवा मंदिरों में अद्वितीय हैं । ये मंदिर नवमी से लेकर बारहवीं शताब्दी के चंदेलवंशीय कलाप्रिय शासकों की कलाप्रियता धर्म–सहिष्णुता के साथ–साथ शिल्पकारों के मस्तिश्क की उर्वरा वैचारिक कल्पनाओं का साकार स्वरूप है ।' खजुराहो के मंदिर नागरशंली के श्रेष्ठ उदाहरण हैं । वे आकार, सौंदर्य और मूर्ति संपदा के अनेक तत्वों की दृष्टि में भारत के किसी भी भाग में विद्यमान देवप्रासादो के मुकाबले अद्वितीय है। यहां निर्मित शैव, वैष्णव या जैन मंदिरों को निर्माण सली तथा शिल्पविधान में प्रायः समान तत्व मिलते हैं । ये मंदिर तलच्छद (ग्राउंड प्लान) एवं ऊर्वच्छंद (एलीवेशन) में निजी विशेषताए रखते हैं । ये प्रायः ऊंची चोकी या जगती पर बनाए गए । इनके चारों ओर किसी प्रकार की दीवार नहीं । इसी कारण आसपास के परिवेशा से ये देवप्रासाद अत्युच्च प्रतीत होते है । भू स्थिति या तलच्छद में ये संटिन कास के आकार है. जिनकी लंबी मजा पूर्व से पष्चिम की ओर बनाई गई है । मंदिरों के तीन प्रधान अग गर्भगह मंडप और अर्घमंडप है । गर्भगृह और अधमंडप के बीच अंतरात है । यहा पूर्ण विकसित कलाशैली के मंदिरों में प्रदक्षिणापथ से जुड़े हए महामंडप का भी निर्माण किया गया है । एक ही धुरी पर निर्मित उपयुक्त भाग बाहर और भीतर से इस प्रकार संयूक्त है कि उनका स्वरूप अत्यंत संगठित और एकरूप बन पड़ा है।'

प्रस्तावना

खजुराहो के मंदिरों के निर्माण में उस समय के उत्तर भारत की । बहुप्रचलित 'नागर शैली' अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची हई दिखाई देती है । आकार–सौंदर्य और मूर्तिसम्पदा की दृष्टि से ये मंदिर भारत के समान रूप अन्य सब स्मारकों अथवा मंदिरों में अद्वितीय हैं । ये मंदिर नवमी से लेकर बारहवीं शताब्दी के चंदेलवंशीय कलाप्रिय शासकों की कलाप्रियता धर्म–सहिष्णुता के साथ–साथ शिल्पकारों के मस्तिश्क की उर्वरा वैचारिक कल्पनाओं का साकार स्वरूप है ।[1] खजुराहो के मंदिर नागरशंली के श्रेष्ठ उदाहरण हैं । वे आकार, सौंदर्य और मूर्ति संपदा के अनेक तत्वों की दृष्टि में भारत के किसी भी भाग में विद्यमान देवप्रासादो के मुकाबले अद्वितीय है । यहां निर्मित शैव, वैष्णव या जैन मंदिरों को निर्माण सली तथा शिल्पविधान में प्रायः समान तत्व मिलते हैं । ये मंदिर तलच्छद (ग्राउंड प्लान) एवं ऊर्वच्छंद (एलीवेशन) में निजी विशेषताए रखते हैं । ये प्रायः ऊंची चोकी या जगती पर बनाए गए । इनके चारों ओर किसी प्रकार की दीवार नहीं । इसी कारण आसपास के परिवेशा से ये देवप्रासाद अत्युच्च प्रतीत होते है । भू स्थिति या तलच्छद में ये संटिन कास के आकार है. जिनकी लंबी मजा पूर्व से पश्चिम की ओर बनाई गई है । मंदिरों के तीन प्रधान अग गर्भगह मंडप और अर्घमंडप है । गर्भगृह और अधमंडप के बीच अंतरात है । यहा पूर्ण विकसित कलाशैली के मंदिरों में प्रदक्षिणापथ से जुड़े हए महामंडप का भी निर्माण किया गया है । एक ही धुरी पर निर्मित उपयुक्त भाग बाहर और भीतर से इस प्रकार संयूक्त है कि उनका स्वरूप अत्यंत संगठित और एकरूप बन पड़ा है।[2]

विश्वनाथ मन्दिर सामान्य नागर शैली का है । विभिन्न प्रदेशों में पाये जानेवाले इस ढंग के मन्दिरों को दृष्टिगत रखते हुए उसे नवीं शती से पूर्वका नहीं कहा जा सकता । मध्य–भारत में इस रूप का जो क्रमिक विकास हम ने अभी देखा है, उसमें निश्चय ही काफी समय लगा होगा य और यह समय किसी प्रकार भी दो शताब्दियों से कम का न होगा ।[3]

खजुराहों मंदिर समूह वैसे तो भारत के मध्य प्रदेश प्रान्त, छतरपुर (छत्रपुर) जिलें में स्थित एक छोटा सा क़स्बा है। लेकिन फिर भी भारत में ताज महल के बाद सबसे ज्यादा देखे और घुमे जाने वाले पर्यटन स्थलों में अगर कोई दूसरा नाम आता है तो खजुरपुर मंदिर समूह भारतीय आर्य स्थ्यापत्य और वास्तुकला की एक अनोखा उदाहरण है । खजुरपुर इसके अलंकृत मंदिरों की वजह से जाना जाता है जो की देश में सर्वोत्तम मध्यकालीन स्मारक है । चन्देल शासको ने इन मंदिरों का निर्माण (950–1050 ई0) के बीच करवाई थी । इतिहास में इन मंदिरों का सबसे पहला जो उल्लेख मिलता है, वह अबूरिहान अलबुरुनी (1022) तथा अरब मुसाफिर इबनब्तूता का है।[4] खजुराहों के मंदिर इंडो–आर्यन अथवा नागर शैली में निर्मित है । खजुराहों मंदिरों में नागर शैली पराकाष्ठ पर पहुँच गयी । नागर की भौगोलिक स्तिथि अज्ञात है । कुछ लेखको का मत है कि बेसर ही नागर है । समरांगणसूत्रधार व ईशानशिवगुरुदेवपद्धति में नागर का बहुत उल्लेख हुआ है । 'नागर' शब्द का सम्बन्ध नागर अथवा पुर से स्पष्ट है । वास्तुशास्त्रों में भी कहा गया है किपरस्तर और पक्की ईटों के प्रासाद नगरों में उनकी शोभार्थ निर्मित होने चाहिए । राखालदास बेनर्जी का मत था कि नागर का संम्बन्ध श्रीनगर अथवा पाटलिपुत्र से है । परन्तु 'नागर'मंदिर शैली का विकास बहुत बाद में, बृहत्सहिंता के बाद जब प्राचीन भारत की राजधानी पाटलिपुत्र का अवसान हो गया था, तब हुआ । नागर शैली का सम्बन्ध नाग से भी हो सकता है । विश्वकर्मप्रकाश में 'वास्तुपुरुष'

को नाग की आकृति का कहा गया है । कदाचित इस शैल का विकास नागजातीय शिल्पियों ने किया था । महाभारत में तक्षक नामक नागराज सुविदित है । तक्षक का नाम इस प्रसंग में सार्थक है । महाभारत के आदिपर्व में मय को एक दानव कहा गया है । वह एक कुशल शिल्पी है; तक्षक से उसका सम्बन्ध इसी मय नमक शिल्पी से है । मय नाग जाती का था ;यह स्मरणीय है कि प्रारंभिक वास्तुशास्त्रों में उल्लिखित 20 प्रकार के प्रसादो को समरांगणसूत्रधार 'नागर' प्रसाद कहता है और उन्हें वराट तथा द्रविड़ प्रसादो से अलग रखता है नागर 'का अर्थ नगर सम्बन्धी, सभ्य, नगर में उत्पन्न आदि है । स्वान च्वाड ने जलालाबाद (अफगानिस्तान) का प्राचीन नाम' नगर' दिया है खजुरपूर मंदिरों में नागर शैली अपने चरम पर देखी गयी जो की आकार, सोंदर्य और मूर्ति परम्परा की दृष्टि से यहाँ के मंदिर भारत के अन्य सब धार्मिक स्मारकों में अद्वितीय है । चौसठ योगिनी, ब्रह्म और लालगुआ मंदिरों को छोड़कर प्रायः सभी मंदिर नदी के तट पर स्थित खानों से लाये गये मटियाले पीले अथवा गुलाबी रंग के रेतीले पत्थर द्वारा निर्मित हुए है । इनमे कोई भी मंदिर बौद्ध मंदिर नही है । विभिन्न धार्मिक साम्प्रदायों के होते हुए भी उनकी प्रधान वास्तु एवं शिल्प योजना समान रूप है । यहाँ तक की उनमें प्रतिष्ठित प्रथम देवमूर्ति के माध्यम के अतिरिक्त उक्त सम्प्रदाय के मंदिर को दुसरे सम्प्रदाय के मंदिर से अलग करना कठिन है। खजुराहो ग्रामीण क्षेत्र में तीस मंदिर है । जिनमें कुछ बिलकुल सही अवस्था में हैं सभी मंदिरों के मध्य दृभारतीय मंदिरों के गुण विद्यमान है । योजना तथा बनावट में समानता के कारण इन्हें खजुराहों शैली के नाम से भी पहचाना जाता है । [5]

खजुरपूर मंदिरो की शैली

खजुरपूर के मंदिर इंडो–आर्यन अथवा नागर शैली में निर्मित है । खजुरपूर मंदिरों में नागर शैली पराकाष्ठ पर पहुँच गयी ।[6] नागर की भौगोलिक स्तिथि अज्ञात है । कुछ लेखकों का मत है कि बेसर ही नागर है । समरांगणसूत्रधार व ईशानशिवगुरुदेवपद्धति में नागर का बहुत उल्लेख हुआ है । 'नागर' शब्द का सम्बन्ध नागर अथवा पुर से स्पष्ट है । वास्तुशास्त्रों में भी कहा गया है कि परस्तर और पक्की ईटों के प्रासाद नगरों में उनकी शोभार्थ निर्मित होने चाहिए। राखालदास बेनर्जी का मत था कि नागर का संम्बन्ध श्रीनगर अथवा पाटलिपुत्र से है । परन्तु 'नागर' मंदिर शैली का विकास बहुत बाद में, बृहत्सहिंता के बाद जब प्राचीन भारत की राजधानी पाटलिपुत्र का अवसान हो गया था, तब हुआ । नागर शैली का सम्बन्ध नाग से भी हो सकता है । विश्वकर्मप्रकाश में 'वास्तुपुरुष' को नाग की आकृति का कहा गया है । कदाचित इस शैल का विकास नागजातीय शिल्पियों ने किया था । महाभारत में तक्षक नामक नागराज सुविदित है । तक्षक का नाम इस प्रसंग में सार्थक है । महाभारत के आदिपर्व में मय को एक दानव कहा गया है । वह एक कुशल शिल्पी हैयतक्षक से उसका सम्बन्ध इसी मय नमक शिल्पी से है। मय नाग जाती का था ययह स्मरणीय है कि प्रारंभिक वास्तुशास्त्रों में उल्लिखित 20 प्रकार के प्रसादो को समरांगणसूत्रधार 'नागर' प्रसाद कहता है और उन्हें वराट तथा द्रविड़ प्रसादो से अलग रखता है । 'नागर' का अर्थ नगर सम्बन्धी, सभ्य, नगर में उत्पन्न आदि है । स्वान च्वाड ने जलालाबाद (अफगानिस्तान) का प्राचीन नाम' नगर' दिया है ।[7] खजुरपूर मंदिरों में नागर शैली अपने चरम पर देखी गयी जो की आकार, सोंदर्य और मूर्ति परम्परा की दृष्टि से यहाँ के मंदिर भारत के अन्य सब धार्मिक स्मारकों में अद्वितीय है। चौसठ योगिनी, ब्रह्म और लालगुआ मंदिरों को छोड़कर प्रायः सभी मंदिर नदी के तट पर स्थित खानों

से लाये गये मटियाले पीले अथवा गुलाबी रंग के रेतीले पत्थर द्वारा निर्मित हुए है । इनमे कोई भी मंदिर बौद्ध मंदिर नही है। विभिन्न धार्मिक साम्प्रदायो के होते हुए भी उनकी प्रधान वास्तु एवं शिल्प योजना समान रूप है । यहाँ तक की उनमे प्रतिश्टित प्रथम देवमूर्ति के माध्यम के अतिरिक्त उक्त सम्प्रदाय के मंदिर को दुसरे सम्प्रदाय के मंदिर से अलग करना कठिन है । खजुरपूर ग्रामीण क्षेत्र में तीस मंदिर है! जिनमे कुछ बिलकुल सही अवस्था में है ! सभी मंदिरों के मध्य–भारतीय मंदिरों के गुण विद्यमान है !योजना तथा बनावट में समानता के कारण इन्हें खजुरपूर शैली के नाम से भी पहचाना जाता है ।[8]

नागर शैली

'नागर' शब्द नगर से बना है। सर्वप्रथम नगर में निर्माण होने के कारण इसे नागर शैली कहा जाता है। यह संरचनात्मक मंदिर स्थापत्य की एक शैली है जो हिमालय से लेकर विंध्य पर्वत तक के क्षेत्रों में प्रचलित थी। इसे 8वीं से 13वीं शताब्दी के बीच उत्तर भारत में मौजूद शासक वंशों ने पर्याप्त संरक्षण दिया। नागर शैली की पहचान–विशेषताओं में समतल छत से उठती हुई शिखर की प्रधानता पाई जाती है। इसे अनुप्रस्थिका एवं उत्थापन समन्वय भी कहा जाता है। नागर शैली के मंदिर आधार से शिखर तक चतुष्कोणीय होते हैं। ये मंदिर उँचाई में आठ भागों में बाँटे गए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं– मूल (आधार), गर्भगृह मसरक (नींव और दीवारों के बीच का भाग), जंघा (दीवार), कपोत (कार्निस), शिखर, गल (गर्दन), वर्तुलाकार आमलक और कुंभ (शूल सहित कलश)। इस शैली में बने मंदिरों को ओडिशा में 'कलिंग', गुजरात में 'लाट' और हिमालयी क्षेत्र में 'पर्वतीय' कहा गया। वास्तुशास्त्र के अनुसार नागर शैली के मंदिरों की पहचान आधार से लेकर सर्वोच्च अंश तक इसका चतुष्कोण होना है । विकसित नागर मंदिरों में गर्भगृह, उसके समक्ष क्रमशः अन्तराल, मण्डप तथा अर्द्धमण्डप प्राप्त होते हैं। एक ही अक्ष पर एक दूसरे से संलग्न इन भागो का निर्माण किया जाता है।

नागर वास्तुकला में वर्गाकार योजना के आरंभ होते ही दोनों कोनों पर कुछ उभरा हुआ भाग प्रकट हो जाता है जिसे 'अस्त' कहते हैं। इसमें मूर्ति के गर्भगृह के ऊपर पर्वत–शृंग जैसे शिखर की प्रधानता पाई जाती है। कहीं चौड़ी समतल छत के ऊपर उठती हुई शिखा सी भी दिख सकती है। माना जाता है कि यह शिखर कला उत्तर भारत में सातवीं शताब्दी के पश्चात् अधिक विकसित हुई. कई मंदिरों में शिखर के स्वरूप में ही गर्भगृह तक को समाहित कर लिया गया है।[9] शैली का प्रसार हिमालय से लेकर विंध्य पर्वत माला तक देखा जा सकता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार नागर शैली के मंदिरों की पहचान आधार से लेकर सर्वोच्च अंश तक इसका चतुष्कोण होना है। विकसित नागर मंदिर में गर्भग्रह उसके समक्ष क्रमशः अन्तराल, मण्डप तथा अर्द्धमण्डप प्राप्त होते हैं। एक ही अक्ष पर एक दूसरे से संलग्न इन भागों का निर्माण किया जाता है। शिल्प शास्त्र के अनुसार नागर मंदिरों के आठ प्रमुख अंग है

- (1) मूल आधार – जिस पर सम्पूर्ण भवन खड़ा किया जाता है।
- (2) मसूरक – नींव और दीवारों के बीच का भाग
- (3) जंघा – दीवारें (विशेषकर गर्भगृह की दीवारें)
- (4) कपोत – कार्निस
- (5) शिखर – मंदिर का शीर्ष भाग अथवा गर्भगृह का उपरी भाग
- (6) ग्रीवा – शिखर का ऊपरी भाग

- (7) वर्तुलाकार आमलक – शिखर के शीर्ष पर कलश के नीचे का भाग
- (8) कलश – शिखर का शीर्षभाग[10]

नागर शैली का क्षेत्र उत्तर भारत में नर्मदा नदी के उत्तरी क्षेत्र तक है। परंतु यह कहीं–कहीं अपनी सीमाओं से आगे भी विस्तारित हो गयी है। नागर शैली के मंदिरों में योजना तथा ऊँचाई को मापदंड रखा गया है। नागर वास्तुकला में वर्गाकार योजना के आरंभ होते ही दोनों कोनों पर कुछ उभरा हुआ भाग प्रकट हो जाता है जिसे 'अस्त' कहते हैं। इसमें चांड़ी समतल छत से उठती हुई शिखा की प्रधानता पाई जाती है। यह शिखा कला उत्तर भारत में सातवीं शताब्दी के पश्चात् विकसित हुई अर्थातपरमार शासको ने वास्तुकला के क्षेत्र में नागर शैली को प्रधानता देते हुए इस क्षेत्र में नागर शैली के मंदिर बनवाये।

मंदिरों की तीन मुख्य शैलियाँ

भारतीय स्थापत्य कला व शिल्पशास्त्रों के अनुसार मंदिरों विशेषतः हिंदू मंदिरों की तीन मुख्य शैलियाँ हैं –

नागर शैली : मुख्यतः उत्तर भारतीय शैली

द्रविड़ शैली : मुख्यतः दक्षिण भारतीय शैली

वेसर शैली : नागर–द्रविड़ मिश्रित मुख्यतः दक्षिण–पश्चिमी भारतीय षैली

पर यह वर्गीकरण भी बहुत स्थूल है। समय व संस्कृति भेद के साथ इनमें भी अनेक भेद व मिश्रण हैं । इनके अतिरिक्त हिमालय में हिमाचल, उत्तराखंड में अपनी पहाड़ी शैली प्रमुख है, तो पूर्वोत्तर में बहुत अलग पूर्वोत्तरीय शैली. इसी प्रकार राजस्थान में अनेक मध्यकालीन मंदिरों में राजपूताना शैली का प्राचुर्य या मिश्रण है, तो आधुनिक काल में ग्रीक–रोमन या यूरोपीय शैली का भी मिश्रण मिल जाता है।[11]

उपसंहार

नागर शैली के श्रेष्ठ मंदिरों के लिए खजुराहो विश्व में प्रसिद्ध है। आकार सौदर्य और मूर्ति संपदा की दृष्टि से ये भारत में विद्यमान पुरावशेषों में अद्वितीय है । वास्तु के समान खजुराहो का शिल्प वैभव भी असाधारण है । यहां की मूर्तिकला प्राचीन परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया है, किंतु वह मुख्य रूप से पूर्व मध्ययुगीन है । खजुराहो मध्यदेश के बीच में स्थित है, जिस पर पूर्व और पश्चिम की कला का प्रभाव पड़ा है । इसीलिए यह कला पूर्वी और पश्चिमी भारतीय कला विधाओं के मनोरम समन्वय के रूप में विकसित हुई । भव्यता, अनुभूति की गहनता और शिल्पी की आंतरिक भावाभिव्यक्ति यद्यपि यहां की कला अपनी पूर्ववर्ती गुप्तकालीन शास्त्रीय कला से श्रेष्ठ नहीं है तथापि उसमें मानवीय सजीवता का आश्चर्यकारी स्पंदन है । खजुराहो में मूर्तियों की बहुलता एवं उन पर प्रदर्शित भावोद्रेक से दर्शक अनुभव करता है जैसे मंदिरों पर उभरी मूर्तियों का साकार सौंदर्य मनभावन स्वर लहरी के समान उसकी आत्मा की अनंत बहराइयों में उतरता जा रहा है ।[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 साहू, डॉ॰ सूरज पाल, *मूर्तिकला का इतिहास*, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ0 **183**

2 राय, उदय नारायण, *भारतीय कला शिल्पशास्त्र एवं प्राचीन स्थापत्य*, लोक भारती प्रकाषन, इलहाबाद, 2006, पृ0 **214**

3 t k"kh] eg"k pUæ] ; qx& *युगीन भारतीय कला,* राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर, 2006, पृ0 **207, 208**

4 अग्रवाल, कन्हेयालाल, *खजुराहो,* दि मैकमिनल कम्पनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1980, पृ0 63

5 डॉ0 अशोक चान्दोरकर, *"प्राचीन भारतीय कला",* लोकहित प्रकाशन, 2016, पृ0 **214**

Websites Visited:

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E 0%A4%BE%E 0%A4%97%E 0%A4%B0_%E0%A4%B6%E0%A5%88%E0%A4%B2%E0%A5%80

https://www.drishtiias.com/hindi/to-the-points/paper1/temple-architecture

https://www.facebook.com/600446020116892/photos/%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%A8-%E0% A4%AE%E0%A5% 81%E0%A4%96%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0%A4%B6 %E0%A5%8 8%E0%A4 %B2%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%81-%E0%A 4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4 %B8%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF-%E0% A4%95%E0%A4%B2%E0%A4%BE-%E0%A4%B5-%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0% A5%8D%E0%A4% AA%E0%A4%B6 %E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0 %A5%8D%E 0%A4%A4%E0 %A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A 4%82-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5 %81%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A4%82% E0%A4%A6%E0%A4%BF/827000170794808/

http://wikipedia.org/wiki/konark.time 8.30 pm date 16/12/2018.

https://hi.wikipedia.org/wiki/konark Retrieved on the time 8.30 a.m and date 16/12/2018

https://www.hindihistory.com. Retrieved on the time 11.27 p.m and date 16/12/2018

https://www.gyanipandit.com.time. Retrieved on the time 8.55 p.m and date 12/16/2018.

https://hi.wikipedia.org/wiki/konark. Retrieved on the time 8.30 a.m and date 16/12/2018.

https://hi.wikipedia.org/wiki/konark. Retrieved on the time 8.30 p.m and date 16/12/2018.

https://hindi.nativeplanet.com. Retrieved on the time 11.35 p.m and date 16/12/2018.

https://hi.wikipededia.org/wiki/. Retrieved on the time 12.30 a.m and date 17/12/2018.

Hindi.webduniya.com. Retrieved on the time 12.16 a.m and date 12/17/2018

Hindi.panditbooking.com/2016/04/. Retrieved on the time 12.44 am and date 17/12/2018

https://hiwikipededia.org/wiki/konark/. Retrieved on the time 8.30 a.m and date 16/12/2018

(Footnotes)

[1]. वर्मा, डॉ॰ महेन्द्र, *खजुराहो में काम और दर्शन,* भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ0 **27**

[2]. अग्रवाल कन्हैयालाल, *खजुराहो,* दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, न्यू दिल्ली, 1980, पृ0 **144**

[3]. शर्मा, डॉ॰ श्याम, *प्राचीन भारतीय कला,* वास्तुकला एवं मूर्तिकला, रिसर्च पबिलकेशन, जयपुर, नई दिल्ली, 2012

[4] https://www.drishtiias.com/hindi/to-the-points/paper1/temple-architecture

[5]. साहू, डॉ॰ सूरज पाल, *मूर्तिकला का इतिहास,* विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ0 **183**

[6]. उदय नारायण राय, *भारतीय कला शिल्पशास्त्र एवं प्राचीन स्थापत्य,* लोक भारती प्रकाशन, 2006, पृ0 **214**

[7]. महेश चन्द्र जोशी, *युग–युगीन भारतीय कला,* राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर, 2006, पृ0 **207–208**

[8]. डॉ॰ अशोक चान्दोरकर, *प्राचीन भारतीय कला,* लोकहित प्रकाशन, 2016, पृ0 **214**

[9]. http://wikipedia.org/wiki/konark. Retrieved on time 8.30 pm and date 16/12/2018.

[10]. https://www.drishtiias.com/hindi/to-the-points/paper1/temple-architecture

. Retrieved on the date 08/08/2020.

[11]. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0_%E0%A4%B6%E0%A5%88%E0%A4%B2%E0%A5%80

,8/08/2020,11am. Retrieved on the date 08/08/2020.

[12]. अग्रवाल कन्हैयालाल, *खजुराहो,* दी मैकमिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1980, पृ0 **164**